

किशोर विद्यार्थियों के आजीविका निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारक

रचना वर्मा मोहन¹, प्रवीण बहुगुणा²

¹ आचार्या, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

² शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में किशोर विद्यार्थियों की आजीविका निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारकों को ज्ञात किया गया है। किशोर विद्यार्थियों से तात्पर्य है वर्तमान समय में कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी हैं। जिनकी आयु लगभग 12 वर्ष से 18 वर्ष तक की होती है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों का शारीरिक विकास, मानसिक विकास, भावनात्मक विकास, सामाजिक विकास और आध्यात्मिक विकास (सर्वांगीण विकास) होता है। इस अवस्था में वृद्धि एवं विकास तीव्र गति से होता है, और इस अवस्था को तनाव, तूफान, संघर्ष और विरोध की अवस्था भी कहा जाता है। भविष्य में आजीविका के बारे में निर्णय लेने के लिए किशोर सक्षम होने की प्रक्रिया में होते हैं। विद्यार्थी अपनी आजीविका निर्णय को काल्पनिक और तार्किक सोच विचार करके करते हैं। विद्यार्थी अपनी रूचि, योग्यता और क्षमता के आधार पर अध्ययन के समय उन विषयों का चयन करते हैं, जिस क्षेत्र में वे आगे बढ़ना चाहते हैं। विद्यार्थियों के आजीविका निर्णय क्षमता को आत्म-नियंत्रण, आत्म जागरूकता, आत्म विश्वास, प्रेरणा, संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह, भावनात्मक क्रियाएं, तनाव व दबाव, पारिवारिक प्रभाव, सामाजिक प्रभाव, आर्थिक प्रभाव, शैक्षिक और सार्वकारिक प्रभाव आदि प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारक हैं। इन सभी कारकों का विद्यार्थियों के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है जिसके कारण उनकी आजीविका का निर्णय इन कारकों के ऊपर निर्धारित होता है। अतः वातावरण का आजीविका निर्णय लेने में विशेष योगदान है।

मूल शब्द: किशोर विद्यार्थी, आजीविका निर्णय क्षमता, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारक

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से मानव के अन्दर निहित ज्ञान, गुण, क्षमता योग्यता और नैतिकता का विकास होता है, जो उसे आत्म-ज्ञान और सामाजिक कल्याण के लिए सक्षम बनाती है। गुणवान शिक्षा से ही मानव वास्तव में मानव कहलाने योग्य होता है। "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् "वही विद्या है जो हमें बंधनों से मुक्त कर जीवन के उच्चतम उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक हो"। शिक्षा एक ऐसा महत्वपूर्ण साधन है, जिससे मानव का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास (सर्वांगीण विकास) होता है। शिक्षा मानव को उन्नति के मार्ग पर ले जाती है तथा सम्पूर्ण रूप से विकसित करने वाले संसाधन के रूप में है। शिक्षा एक कला और विज्ञान है, जो मानव के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। जब बालक का जन्म होता है तो वह वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है। बालक की सर्वप्रथम पाठशाला घर से ही शुरू हो जाती है, जिसमें उसके माता-पिता ही प्रथम गुरु होते हैं। माता-पिता व परिवार से बालक अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करके औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय में प्रवेश करता है। किशोरावस्था तक विद्यार्थी पूर्ण रूप से परिपक्व हो जाता है जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी की उम्र लगभग 12 वर्ष से 18 वर्ष तक मानी जाती है। इस अवस्था को जटिल अवस्था के रूप में जाना जाता है जिसमें तनाव, क्रोध, तूफान, विरोध और कामवासना की भावना निहित होती है। इस अवस्था के दौरान विद्यार्थी अपनी आजीविका का निर्णय कर लेते हैं, जिसमें वे आगे जाकर काम करना चाहते हैं। आजीविका का चयन करते समय विद्यार्थियों को कुछ मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारक प्रभावित करते हैं।

किशोर विद्यार्थी

किशोरावस्था जन्मोपरान्त मानव विकास की तीसरी अवस्था है। यह अवस्था बाल्यावस्था के अन्त होने पर तथा प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ होने से पहले तक चलती है। किशोरावस्था के लिए आंग्ल

भाषा में एडोलेसेन्स (Adolescence) शब्द का प्रयोग किया जाता है। एडोलेसेन्स शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के एडोलेसीअर (Adolescere) से हुई। इस शब्द का अर्थ वृद्धि (to grow) होना है। किशोरावस्था में मानव की वृद्धि और विकास अधिक तीव्र गति से होता है। व्यक्तिगत भेदों व जलवायु आदि के कारण इस अवस्था में कुछ अन्तर पाया जा सकता है। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार 12 वर्ष से लेकर 18 वर्ष तक की आयु के अंतर्गत किशोर विद्यार्थी आते हैं। यह अवस्था विद्यार्थियों के लिए सर्वाधिक जटिल, कठिन और तूफान की अवस्था मानी जाती है। इस समय विद्यार्थियों के अन्दर तनाव, दबाव, कामवासना, भय, विरोध और संघर्ष होता रहता है। विद्यार्थी इस समय कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक कक्षाओं के अन्तर्गत अध्ययनरत रहते हैं। किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें बालक परिपक्वता की ओर अग्रसर होते हैं, तथा तार्किक चिन्तन, मनन के द्वारा सोच समझकर कोई भी निर्णय लेने लगते हैं। किशोरावस्था को जीवन में ऐसा बताया गया है कि जिसमें विद्यार्थी बच्चा नहीं रहता और न ही पूरा वयस्क होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी अनेक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों से गुजरता है। किशोर विद्यार्थी विषमलिंग से प्रेम करने लगते हैं तथा अधिकांश विद्यार्थी शराब एवं धूम्रपान जैसे आदि गलत कार्यों में पड़ जाते हैं। कुछ विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन एवं परामर्श नहीं मिलने पर माता-पिता तथा गुरु (समाज) के प्रति उनका व्यवहार-आचरण-नैतिकता में बदलाव होने लगता है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों का शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, मानसिक विकास, भावनात्मक विकास और आध्यात्मिक विकास होता है। इस अवस्था में लड़के एवं लड़कियों के विकास कुछ अन्तर पाया जाता है।

आजीविका निर्णय क्षमता

किशोर विद्यार्थियों के द्वारा आजीविका का निर्णय लेना एक अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि यह उनके भविष्य से सम्बन्धित होता है। आजीविका निर्णय भविष्य में विद्यार्थियों को

आत्मनिर्भर बनाने की एक दिशा है। 9 वीं कक्षा से लेकर 12 वीं कक्षा तक के अन्तराल में विद्यार्थी पूर्णरूप से परिपक्व हो जाते हैं। उन्हें सही और गलत का पूरा ज्ञान हो चुका होता है। इस अन्तराल के दौरान विद्यार्थी अपनी रूचि, योग्यता, क्षमता, स्वयं के अनुभवों से तथा अपने आदर्शों से मार्गदर्शन एवं परामर्श लेकर अपनी आजीविका का चयन करते हैं। आजीविका से तात्पर्य है कि विद्यार्थी जिस क्षेत्र में आगे (भविष्य) कार्य करना चाहता है। विद्यार्थी चाहे सरकारी क्षेत्र में कार्य करे, चाहे विद्यार्थी अर्धसरकारी के रूप में कार्य करे और चाहे विद्यार्थी स्वयं कुछ कारोबार खोले। इन सभी क्षेत्रों में आजीविका पाने के लिए विद्यार्थियों को सबसे पहले उन विषयों का ज्ञानार्जन करना अति आवश्यक होता है। यदि विद्यार्थी एक आदर्श शिक्षक बनना (आजीविका) चाहता है तो उसे सर्वप्रथम उस विषय का चयन करना होता है। जिस विषय में वो शिक्षक बनना चाहता है तदुपरान्त माध्यमिक शिक्षा के बाद उस विषय से B-A- करने के बाद B-Ed करें तो वह भविष्य में उस विषय का शिक्षक बन सकता है जो विषय माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते समय उसने चयन किये थे। इस उम्र में किया गया आजीविका का निर्णय उसे सफलता के पथ पर ले जाता है। किशोरावस्था वह समय होता है जब विद्यार्थी अपने अनुभवों के माध्यम से आजीविका का निर्णय कर लेता है। किशोर विद्यार्थी के आजीविका निर्णय क्षमता को मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारक प्रभावित करते हैं जिसके माध्यम से वे अपनी आजीविका के क्षेत्र में परिवर्तन करते हैं।

आजीविका के क्षेत्र

आजीविका के क्षेत्र से तात्पर्य उन सभी व्यवसायों, नौकरियों एवं गतिविधियों से है जिसमें कोई व्यक्ति अपना जीवन यापन करता है। यह क्षेत्र बहुत ही व्यापक है जिसमें व्यक्ति दूसरों पर निर्भर या स्वरोजगार के माध्यम से कार्य करता है जो इस प्रकार से है—

कृषि क्षेत्र

कृषि से संबंधित कार्य करने से व्यक्ति अपनी आजीविका का यापन करता है। भारत कृषि प्रधान देश है जो लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत है। जिसके अंतर्गत खेतों में फसल उगाना, बागवानी करना, पशुपालन करना, मत्स्य पालन, और दुग्ध उत्पादन आदि कार्य करते हैं।

उद्योग उत्पादन क्षेत्र

उद्योग उत्पादन वह क्षेत्र है जिसमें कच्चे माल से मशीनों और तकनीकों की मदद से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। इसके अंतर्गत हस्तशिल्प, बुनाई, कपड़ा मिल, फर्नीचर निर्माण, लोहा एवं इस्पात और सीमेंट उद्योग आदि का व्यवसाय करने से है।

सेवा क्षेत्र

यह सेवा क्षेत्र भारत की अर्थव्यवस्था में सबसे उपयोगी एवं सबसे बड़ा योगदान देता है जो तेजी से आगे बढ़ रहा है। जिसमें शिक्षा सेवा, स्वास्थ्य सेवा, बैंकिंग और वित्त सेवा, सूचना प्रौद्योगिकी, परिवहन और संचार, सरकारी प्रशासनिक सेवाएं हैं।

स्वरोजगार क्षेत्र

स्वरोजगार से तात्पर्य है कि जब व्यक्ति किसी भी संस्था में नौकरी नहीं करता है। इसमें व्यक्ति अपना स्वयं का व्यवसाय दुकान, डिजिटल रोजगार, कृषि, पशुपालन एवं ऑटो और ट्रांसपोर्ट आदि कार्य अपनी स्वेच्छा से करता है।

असंगठित क्षेत्र

असंगठित क्षेत्र वह क्षेत्र है जिसमें काम करने वाले लोगों को नियमित वेतन, सुरक्षा एवं सरकारी सेवाओं का लाभ प्राप्त नहीं होता है। यह क्षेत्र आजीविका का बहुत बड़ा हिस्सा है जो

खासकर गरीब, निम्न और मध्यम वर्ग के लिए है। जिसमें व्यक्ति कृषि, मजदूरी, घरेलू कामगार, रिक्शा चालक, फेरी-रेहड़ी और कूड़ा बीनने वाले आदि लोग आते हैं।

पारंपरिक क्षेत्र

यह पारंपरिक आजीविका क्षेत्र पीढ़ियों से चला आ रहा है। जिसमें खेती करना, गाय, भैंस, बैल, भेड़-बकरी पालन, मछली पकड़ना, हस्तशिल्प, नाई, धोबी, सुनार, लोहार, चर्मकार, नृत्य, लोक गायन और पेंटिंग आदि कार्य आते हैं।

प्रधानमंत्री रोजगार मेला

प्रधानमंत्री रोजगार मेला यह भारत सरकार की एक पहल है जो श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी के नेतृत्व में प्रारम्भ किया गया है। जिसका मुख्य उद्देश्य है कि युवाओं को सरकारी रोजगार के अवसर प्रदान करना और बेरोजगारी को कम करना है। सरकारी विभागों में रिक्त पदों की पूर्ति करना और आजीविका को डिजिटल और पारदर्शी बनाना। प्रधानमंत्री रोजगार मेला का शुभारम्भ 22 अक्टूबर 2022 ई. को हुआ था। इस रोजगार मेला में 10 वीं पास से लेकर पोस्ट ग्रेजुएट, टेक्निकल और नॉन टेक्निकल के सभी वर्गों के युवा भाग ले सकते हैं। जिनकी उम्र 18 से लेकर 35 तक निर्धारित की गई है। चयनित उम्मीदवारों को 12000 से लेकर 35000 रुपये तक का मासिक वेतन मिलेगा। अब तक इस रोजगार मेला में लगभग 10 लाख से अधिक लोगों को स्थायी सरकारी नौकरियां दी जा चुकी है। केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में रोजगार के अवसर शामिल किये गये हैं। नवनि्युक्त युवा राजस्व विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, गृह मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, भारतीय रेलवे, डाक विभाग, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय आदि विभागों में काम करेंगे।

आजीविका निर्णय को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारक

आजीविका निर्णय लेना एक जटिल प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया से गुजरते समय विद्यार्थी के व्यवहार, मानसिक और भावनात्मक संवेगों की प्राथमिकता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। आजीविका का चयन करते समय अनेक प्रकार के मनोवैज्ञानिक कारक उन्हें प्रभावित करते हैं। जिसका उनके भविष्य पर सीधे प्रभाव पड़ता है जो इस प्रकार से हैं—

1. आत्म – जागरूकता

आजीविका का निर्णय करते समय विद्यार्थी सबसे पहले स्वयं को जानने का प्रयास, अपनी भावनाओं, विचारों, विश्वासों और कार्यों के प्रति सचेत रहते हैं। विद्यार्थी यह जानने की कोशिश करता है कि जो विषय मैं ले रहा हूँ, वह मेरे लिए कितना सार्थक है। वह इस कार्य को करने के योग्य है कि नहीं। इस अवस्था में विचार और भावनाएँ परिवर्तित होती रहती है जो उसके कार्यों को प्रभावित करती हैं। विद्यार्थी अपने स्वास्थ्य और ऊर्जा को बनाने के लिए योग, ध्यान और शारीरिक अभ्यास करते हैं। इन सभी कारकों में यदि समस्या उत्पन्न हुई तो विद्यार्थी के बेहतर निर्णय लेने की क्षमता, मानसिक शान्ति और आत्मविश्वास में वृद्धि आदि प्रभावित होते हैं।

2. आत्म विश्वास और प्रेरणा

विद्यार्थी के अन्दर पूर्ण रूप से आत्मविश्वास होना चाहिए ताकि वह विषय के सभी सकारात्मक पहलुओं को पूरी तरह समझ सके। अपने निर्णय पर पूरा भरोसा करना, अध्यापक से प्राप्त ज्ञान पर पूर्ण विश्वास, माता-पिता, गुरु और संतो से मिली प्रेरणा से विद्यार्थी अपने कार्य के प्रति साहस, धैर्य और सकारात्मक विचारों के बल से अग्रसर होता है। इन विभिन्न कारकों के विपरीत स्थिति होने पर ये पतन की ओर ले जाते हैं। विद्यार्थी अपनी आजीविका के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से ही लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

3. तनाव और दबाव

किशोरावस्था में विद्यार्थी पर आजीविका निर्णय के समय व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक दबाव होते हैं जिसके कारण वे विषय का चयन करते हैं। जो कभी-कभी उनकी अपनी रुचि के विपरीत होते हैं। रुचि व योग्यता के आधार पर विषय न होने के कारण विद्यार्थियों का मन अध्ययन में नहीं लगता जिस कारण से वे आजीविका को प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं। तनाव और दबाव के कारण विद्यार्थी के स्वास्थ्य पर, निर्णय क्षमता पर तथा मन को एकाग्र करने में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

4. आजीविका परामर्श

परामर्श दाता विद्यार्थी को उसकी रुचि, क्षमता और उसके कौशलों के आकलन करने में सहायता करके, यह समझाने का प्रयास करता है कि आपकी जिस भी क्षेत्र में कार्य करने की योग्यता है। उसी विषय को लेना आवश्यक सिद्ध होगा। परामर्श दाता विद्यार्थी को उचित निर्णय लेने में सहायता, आत्मविश्वास को बढ़ाना, आर्थिक प्राप्ति के उपाय, कौशल विकास के प्रति जागरूक, रोजगार के विभिन्न अवसरों की जानकारी देना आदि प्रकार के सुझाव देता है जिससे आजीविका निर्णय प्रभावित होता है।

5. भावनात्मक समर्थन

विद्यार्थी आजीविका निर्णय करते समय भावनात्मक अस्थिरता का अनुभव कर सकते हैं। उन्हें असफलता का डर, निर्णय लेने में चिन्ता/तनाव/दबाव तथा असमंजस या आत्म-संदेह के कारण सही आजीविका का निर्णय लेने में कठिनाई होती है।

आजीविका निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारक

विद्यार्थी का लालन-पालन समाज के अंतर्गत होता है। अध्ययन के समय विद्यार्थी जब अपनी आजीविका का निर्णय करता है तो उस दौरान उस पर समाज का प्रत्यक्ष रूप से गहरा प्रभाव पड़ता है। जिस कारण से वह आजीविका का चुनाव करते समय दुविधा में पड़ जाता है। समाज विद्यार्थी को अनेक प्रकार के सुझाव अपने-अपने अनुसार देने लगते हैं। विद्यार्थी की आजीविका पर प्रत्यक्ष रूप से पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सरकारी आदि प्रकार के प्रभाव पड़ते हैं जो इस प्रकार से हैं—

1. पारिवारिक कारक

परिवार के सदस्य विद्यार्थी के जीवन में सर्वप्रथम एवं महत्वपूर्ण सामाजिक इकाई हैं। परिवार विद्यार्थी को पढ़ाने में अपना पूरा सहयोग देता है। माता-पिता विद्यार्थी के अध्ययन के समय सही मार्गदर्शन, उसके प्रति अच्छा व्यवहार, अच्छे संस्कार-आचरण की शिक्षा एवं पढ़ाई में पूरा सहयोग करते हैं तो विद्यार्थी अपनी पढ़ाई को अच्छे से करके उन्नति का मार्ग तलाशते हैं। परिवार में यदि माता-पिता के द्वारा कलह बनी रहती है तो विद्यार्थी के अध्ययन में बाधा उत्पन्न हो जाती है। उसका मन अध्ययन से भटक जाता है और अंत में विद्यालय को छोड़ देता है।

2. सामाजिक कारक

विद्यार्थी के आजीविका निर्णय पर समाज का भी विशेष योगदान रहता है। परिवार के बाद समाज के साथ ही अधिक रहता है। सामाजिक लोग भी विद्यार्थी को अनेक प्रकार के शिक्षा के लिए दिशा निर्देश देते हैं। समाज में लिंग भेद व जाति प्रथा और सामाजिक भेदभाव के द्वारा विद्यार्थी को किसी विशेष क्षेत्रों में जाने से रोका जाता है तथा उन्हें सीमित अवसर दिए जाते हैं। जिस कारण विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार आजीविका का चयन सही से नहीं कर पाते हैं।

3. आर्थिक कारक

आजीविका के निर्णय में आर्थिक प्रभाव सबसे अधिक महत्वपूर्ण योगदान निभाता है। विद्यार्थी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति

के अनुसार अपनी आजीविका का निर्णय करते हैं। कई परिवार ऐसे भी होते हैं जो बेरोजगारी के कारण अपने बच्चों को घरेलू कार्यों में लिप्त रखते हैं उन्हें विद्यालय में नहीं भेज पाते हैं। जो विद्यार्थी विद्यालय तक पहुँच पाते हैं, उन्हें उच्चतर शिक्षा के संसाधन, अधिक धन व्यय तथा कॉलेज दूर होने कारण कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा उनकी वहाँ तक पहुँच असम्भव होती है। परिवार के सदस्य पूरे सप्ताह विद्यार्थी को विद्यालय भेजने में असमर्थ होते हैं क्योंकि विद्यार्थी को मजदूरी करने भी जाना पड़ता है। परिवार की आर्थिक स्थिति विद्यार्थी के आजीविका निर्णय को प्रभावित करती है।

4. सांस्कृतिक कारक

किसी भी समाज की सांस्कृतिक, परम्परागत मान्यताएं होती हैं कि जो उसके पूर्वज व्यवसाय करते आये हैं उसी को हमें भी आगे बढ़ाना है। परिवार और समाज का दबाव भी होता है कि किशोर इन्हीं व्यवसाय को अपनाएं। धार्मिक विश्वास और रीति रिवाज भी विद्यार्थी के आजीविका के निर्णय को प्रभावित करती हैं।

5. लैंगिक कारक

समाज में लिंग भेद भी आजीविका निर्णय को प्रभावित करता है। महिलाओं को कुछ विशेष आजीविका के क्षेत्र में जाने से रोका जाता है। उन्हें आजीविका में सीमित अवसर दिए जाते हैं। पितृसत्ता व्यवस्था के कारण महिलाओं और पुरुषों को अलग-अलग अवसर दिए जाते हैं, जो उनके शिक्षा और आजीविका को प्रभावित करते हैं।

6. शैक्षणिक वातावरण कारक

कई क्षेत्रों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की शिक्षा पर कम ध्यान दिया जाता है। जिसके कारण महिलाएं आजीविका के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पाती हैं। लड़कों को इंजीनियरिंग, चिकित्सा एवं तकनीकी आदि कोर्स करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिलाओं को कम समय में तथा आसानी से प्राप्त कोर्स करने की सलाह दी जाती है। पुरुषों को लगातार अध्ययन में व्यस्त रखा जाता है किन्तु महिलाओं को घरेलू कार्यों में लगा दिया जाता है और घर तक ही सीमित किया जाता है।

7. मीडिया और जनसंचार कारक

मीडिया विद्यार्थी के आजीविका निर्णय में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से विद्यार्थी को विभिन्न प्रकार के आजीविका विकल्पों की जानकारी प्राप्त होती है। टेलीविजन, इंटरनेट, सोशल मीडिया, समाचार पत्र और विज्ञापन विद्यार्थी के निर्णय को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में प्रभावित करते हैं। मीडिया समाज में आजीविका से सम्बन्धित पुरानी रुढ़ियों, विचारधाराओं को परिवर्तित करती है। मीडिया के माध्यम से विद्यार्थी को नए तथा विभिन्न कौशलों की जानकारी प्राप्त होती है।

8. सरकार की नीतियाँ

सरकार के माध्यम से आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक प्रयास से विद्यार्थी को उनकी आजीविका के लिए नए अवसर प्रदान किये जाते हैं। जो उनके आजीविका निर्णय को दिशा प्रदान करने में अहम भूमिका निभाते हैं। सरकार द्वारा रोजगार के विभिन्न प्रकार के अवसर प्रदान किये जाते हैं। सरकार शिक्षा नीति में परिवर्तन करके, कौशल विकास द्वारा प्रशिक्षण प्रदान करके, नई दिशा में आजीविका चुनने में सक्षम बनाती है। सरकार विद्यार्थी को अनेक प्रकार से आर्थिक सहायता प्रदान कराती है। जिसके माध्यम से वे अपनी शिक्षा को निरंतर जारी रख सकें। आरक्षण के माध्यम से सामाजिक असमानता को कम करके हर विद्यार्थी की शिक्षा तक पहुँच, तथा महिलाओं को भी स्वरोजगार, कौशल विकास और

सुरक्षित कार्यस्थलों के माध्यम से सशक्त बनाया जा रहा है। आजीविका निर्णय क्षमता पर पड़ने वाले उपरोक्त मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारकों से विद्यार्थी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। तथा वे अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। जबकि नकारात्मक प्रभाव से विद्यार्थी को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष

किशोर विद्यार्थियों की आजीविका निर्णय क्षमता उनकी व्यक्तिगत रुचि, क्षमता, योग्यता और आवश्यकता पर निर्भर होती है। इस अवस्था तक विद्यार्थी का पूर्णरूप से सर्वांगीण विकास होता है। विद्यार्थी अपने स्वयं के मूल्यांकन, परिवार की सहमति, समाज की आवश्यकताओं, समाज में आदर्श जनों के मार्गदर्शन एवं परामर्श से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अध्ययनरत रहते हैं। सकारात्मक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक दिशा निर्देश द्वारा विद्यार्थी कठिन परिश्रम करते हुए, अपने लिए उपयुक्त योजनाबद्ध ढंग से आजीविका का निर्णय करते हैं। आजीविका प्राप्ति तक विद्यार्थी निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रहते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता, एस. पी. (2019) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज ।
2. गुप्ता, एस. एवं अग्रवाल, जे. सी. (2014) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, शिप्रा पब्लिकेशन्स दिल्ली ।
3. तिवारी, शारदा (2024) शिक्षा का समाजशास्त्र, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली ।
4. दुबै, मनीष एवं दुबै. विभा (2014) शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
5. बि, पद्ममित्रश्रीनिवास: (2012) शिक्षाया: मनोवैज्ञानिकाधारा:, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर ।
6. मंगल, एस. के. (2008) शिक्षा मनोविज्ञान, PHI Learning Private Limited, दिल्ली ।
7. मानव, आर. एन. (2017) अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान, सी/ओ आर. पब्लिकेशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, मेरठ ।
8. मिश्रा, महेन्द्र कुमार (2014) उदीयमान भारतीय समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली ।
9. लाल, रमन बिहारी (1991) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
10. सिंह, मनोज कुमार (2014) शिक्षा और समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली ।
11. सुलैमान, मुहम्मद (2007) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
12. त्रिपाठी, शालिग्राम (2019) शिक्षा मनोविज्ञान, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली ।
13. <https://files-eric-ed-gov 04/05/25>
14. <https://egyankosh-ac-in 05/05/25>
15. <https://www-careerhelp-org-za 05/05/25>
16. <https://www-tv9hindi-com 07/05/25>
17. <https://thehowpedia-com 07/05/25>